International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 12 No.2 Nov-Dec 2024

बंजारा समज की मानवीमुल्य प्रार्थना "जीव जिन्दगानी न साईवेस"

प्रा. डॉ. दत्ता उद्धव जाधव.
इतिहास विभाग प्रमुख. व मार्गदर्शक
श्रीरेणुकादेवी कला. वाणिज्य आणि विज्ञान महाविद्यालय, माहूर.
ता. माहूर जि. नांदेड.
Corresponding Author: प्रा. डॉ. दत्ता उद्धव जाधव.
Email: Jadhavdu24@gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.14409061

प्रस्तावना :

गोर बंजारा समाज की गोरबोली में एक सूंदर प्रार्थना है, "**जीव जिन्दगानी न साईवेस"** इसी एक लाईन प्रार्थना से गोर बंजारा समाज की गोरधाटी के संस्कार का ज्ञान हो जाता हैं। जो किसी धर्म से प्रभावित नहीं है। बंजारा समाज की वैश्विक सभी मानव सहीत सजीव प्राणियों के लिए यह जीवन मुल्य प्रार्थना है।

गोर बंजारा समाज जिसे उनकी गोर बोली मे गोरमाटी कहते हैं। गोरमाटी एक आदिम समूह हैं। गोर बंजारा समाज वैदिक प्रथाओं के चतुर्वर्ण के दायरे से बाहर हैं। गोर बंजारा को किसी भी धर्म के पिंजरे में नहीं रखा जा सकता। वह उससे परे हैं। उनका प्रकृति से घनिष्ठ संबंध है। हालांकि भारतीय जनगणना में गोर बंजारा समाज को या गोरमाटी गण समाज को हिंदू के रूप में संदर्भित किया गया है। लेकिन गोर बंजारा समाज को वैदिक काल में, हिंदू धर्म के पहले चतुर्वर्ण समाज प्रणाली में शामिल नहीं किया गया था। "**जीव जिन्दगानी न साई वेनो"** यही गोर बंजारा समाज की, गोरमाटी गोरगणो की मौखिक लोग गितो में मानव सहीत पशु मात्रा के बारे में विचार उच्च स्तर के माननी मुल्य हैं। गोर बंजारा समाज में नात्रो यह संस्कार है। नात्रो याने एक मानवतावादी सबंध है। गोर बंजारा समाज की धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यताओं को गोरधाटी कहते हैं। गोर बंजारा समाज प्रकृती पुजक हैं। बंजारा समाज की गोरधाटी में भगवान की अवधारणा को खारिज कर दिया गया है। गोर बंजारा समाज सिंधु घाटी का उद्गाता हैं। गोर संस्कृति याने गोरधाटी सिंधु संस्कृति की धरोहर है। प्राचीन काल में गोरधाटी में ऐसा कोई देवता का नाम नहीं था। तांडा लोकतंत्र पर आधारित एक गणसमाजी जीवन पद्धति है। जीसे गोर बंजारा समाज में गणगौर कहते हैं। तीज और होली के त्योहारों को गणसभा की मंजूरी की जरूरत होती है। यही गणगौर बंजारा समाज में सामुहिक रूप में पुजा जाता है।

गोर बंजारा गणसमाज में व्यक्तिगत स्वामित्व की भावना नहीं है। जैसे गण समाज में कोई एकाधिकार शक्ति नहीं है। इसलिए कोई भगवान नहीं है। जो इसे नियंत्रित करता है। गोर बंजारा समाज को गणसभा नियंत्रित करती है। यह गणसभा याने गणगोर ही गोर बंजारा समाज के जीवन जीने का नियम बनाया है।

"**जीव जन गानीन साई वेणु!**" इन शब्दों में वह विश्व बंधुत्व का वरदान मांगते हैं। गोर बंजारा समाज अपने गोरधाटी के नात्रो याने संस्कार में पृथ्वी को धरती कहते हैं। मेलीया का मतलब गोर बोलीं में आकश में रहने वाले मेघ होता है। मेलिया और पृथ्वी पर रहने वाले मानव सहित प्राणियों के लिए प्रार्थना की गयी है। गोर बंजारा समाज याने गोरगणो की जीवन शैली की पहली पहचान पृथ्वी, मेलिया, पशु, पक्षी, गाय, भैंस, बैल, बकरी आदि जानवरों की पूजा है। **सहनावक्तु सहानाभुनाक्तु यह** एक वैदिक कालीन आर्यों की वेदों में एक प्रार्थना है। वेदों में आर्यों की यह प्रार्थना सर्व समावेश हैं। इस प्रकार की प्रार्थना गोर बंजारा समाज में है। गोर बंजारा समाज में "**सेर रो सवशेर करेस याडी**" यह प्रार्थना है। गोर बंजारा समाज में प्रार्थना को अरदास भी कहाँ जाता है। गोर बंजारा समाज की गोरधाटी में किये गए सभी संस्कारोकी प्रार्थना में मानवीय मूल्यों का सर्व समावेश हैं।

गोर बंजारा समाज की गोरधाटी की प्राचीन परंपरा को सिंधु संस्कृति में खोजा जा सकता है। गोरधाटी सिंधु संस्कृति की एक प्राचीन परंपरा है। गोरधाटी में सींग संस्कृति के प्रतीक के रूप गोर महिला आठीचौटला में अपने सिर पर सींग पहनती हैं। गोरमाटी में **"भुकेन दी कोल बाटी; तरसेन लोटाभरो पानी"** को अपना "धर्म" मानते हैं। इसका मतलब है,की, भुखे को खाने के लिए देना और प्यासे को पानी पिलाया जाना चाहिए। याने सभी जरूरत मंद को मदद करनी चाहिए। गोर बंजारा समाज के गोरधाटी के तत्वों में आता है कि, "**करम कर्तु धर्म आडो अवच"** याने कोनसे ही कार्य करते समय धर्म की कोई आडकाटी नहीं आनी चाहिए। याने धर्म के अधीन होकर कर्म नहीं करना चाहिए। गोरधाटी की धर्म संकल्पना गोर बंजारा समाज की

गोरधाटी के संस्कारो के प्रार्थना पर आधारित है। गोर बंजारा समाज की गोरधाटी में धर्म की अवधारणा स्वतंत्रता, समानता, भाईचारा, करुणा और मित्रता के मानवीय मूल्यों का प्रतीक है। गोर बंजारा समाज के गोरधाटी के विचारों में सात्विक मुल्यों की जानकारी दियी गयी है। गोरधाटी में गोरबोली में कहते हैं कि, "**सत भगत दनियाम रिये, ओलखेवालो ओलख लिए, जना गोरुपम रंग आये"** याने इस दुनिया में नये नये धर्म का उद्य होगा। उस धर्म के प्रचारक और अनेक संत महात्मा अपने अपने धर्म के तत्व और प्रार्थना का प्रचार और प्रसार करते रहेंगे। लेकिन गोर बंजारा समाज के संस्कार में कोई नया रंग डाल पायेंगे। गोर बंजारा समाज में बहुत संत महात्मा होकर गए हैं। लेकिन गोरधाटी के संस्कारी मुल्ये को कभी बदला नहीं गया। संत सेवालाल महाराज कहते हैं, की, सत्य ही अंतिम संस्कार है. **जाणजो, पहजाणजो पच माणजो**, याने कोई कार्य करते समय प्रथम उसे अच्छे तरह से समजना चाहिए। उन्हें अपने आचरण में लाना चाहिए। अगर वह सही और सात्विक है तो मानना चाहिए। यह गोर बंजारा समाज के गोरगानों की नीति हैं। गोर बंजारा समाज की गोरधाटी की धारणा है, कि, प्रकृति उनके जीवन का रहस्य है। वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए प्रकृति की अलौकिक शक्तियों को मौखिक रूप से चुनौती दी जा सकती है। या प्रकृति की शक्तियों को प्रतीकात्मक रूप से प्रकृति के व्यवहार की नकल करके हावी किया जा सकता है। गोर बंजारा समाज के गोरधाटी में जादू एक ऐसी प्रणाली है, जो मुंजा शक्ति की शक्ति से भी अलौकिक शक्तियों को अपने अधीन कर सकती है। गोर बंजारा समाज के गोरमाटी लोगों का मानना है, की, मुंजा शक्ति का सिंहासन भगवान के सिंहासन से एक चौथाई (सव्वा) हाथ ऊंचा है। गोर बंजारा समाज की गोरधाटी के मूल सौन्दर्य को प्रभावित किये बिना हमें उसके मूल अस्तित्व को बनाए रखना चाहिए। गोर बंजारा समाज में एक नए धर्म की स्थापना करनी होगी और उस धर्म का नाम होगा.. **गोर धर्म...।**

सारांश :

गोर बंजारा समाज की गोरधाटी प्राचीन संस्कृती है। दुनिया की सबसे पुरातन और विशेषता भरी गोर संस्कृती है। गोरधाटी, सिंधू संस्कृती से आज तक पाच हजार साल से टिकी हुई है। गोरमाटी की वेशभूषा, बोलीभाषा ,रहनसहन, मान्यतायें अलग है। पाच हजार साल से चली आ रही गोर संस्कृती कालानुरूप हर धर्म से प्रभावित हुई है। गोर संस्कृति किसी धर्म की उपज नही है। सभी धर्म पर गोर संस्कृती का छाप पडा है। गोर संस्कृती का इतिहास गोरमाटी की गोर बोली के गीतो मे, मौखिक स्वरूप मे जिवित है। इतिहास लिखित हो, या मौखिक हो, वह उस समाज का स्वाभिमान होता है। गोरधाटी के मानवी मुल्य आज भी गोर बंजारा समाज में जिवित है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. बळीराम पाटील : बंजारा लोकांचा इतिहास : दुर्गा प्रकाशन, कारंजा लाड.
2. बळीराम पाटील : आलेख समाज प्रगतीचा : दुर्गा प्रकाशन, कारंजा लाड.
3. रीतेश हरीष पवार : साप्ताहिक वसंतराज : संपादक साप्ताहिक वसंतराज.
4. डॉ. श्री राम शर्मा : बंजारा समाज : हैद्राबाद प्रकाशन हैद्राबाद.
5. भाई प्रेमसिंग जाधव : बंजारा दर्पण : विद्या प्रकाशन औरंगाबाद, 2002.
6. डॉ. दत्ता उध्दव जाधव : माहूरगडाची रायबागन : ए. वन. प्रकाशन, परभणी. 2015

प्रा. डॉ. दत्ता उद्धव जाधव.